श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - १०

मार्च २०१९

प्रश्न - पत्र

गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. प्रार्थना सूत्र में उसी तरह नामस्तव में प्रभु के पास..... याचना करते रहते है ।
२. चेतना को ..... वासित बनाकर निद्रा लेना चाहिये ।
३. निषध पर्वत..... जाति के लाल सुवर्ण का है ।
४. साधु मुनिराज श्रावक के घर भोजन के समय पर ही ..... आये उसे अतिथि कहा जाता है ।
५. संवत्सरी प्रतिक्रमण में उपसर्गो का निवारण करने वाले ..... स्तवन को अवश्य पडना चाहिये ।
६. अति नींदवाला व्यक्ति सचमुच दोनों भवों के ..... से भ्रष्ट होता है
७. यह जीव दानादि कर्म ..... के उदय से नहीं कर सकता ।
८. चौथे आरे में जन्मे हुए प्रभास ..... काया वाले थे ।
९. संलेषणा व्रत के प्रभाव से इन्द्र चक्रवर्ती की पदवी की अभिलाषा करना ..... नामक अतिचार है ।
१०. यदि तुम परम पद की इच्छा रखते हो तो ..... में श्रद्धा करो ।
११. ..... ही मनुष्य क्षेत्र के नाम से पहचाना जाता है ।
१२. श्रावक जीवन के ..... का सुन्दर पालन करना ।
१३. सुझता अन्नपान आदि हो उसे न देने की बुद्धि से सचित्त पान फल आदि से ढंका हो तो ..... अतिचार जानना ।
१४. देहरहित जन्म मरण रहित आत्मा की ..... मानने को ही वे तैयार नहीं थे ।
१५. पाँच इन्द्रियों के विषय में परवशता और आसक्ति ..... चारित्र मोहनीय कर्म बंधवाता है ।
१६. समय की गिनती ..... की गति के कारण होती है ।
१७. गणधरों की स्थापना के समय ..... दिव्य सुगंधित चूर्ण का सुवर्ण थाल लेकर खडा रहा ।
१८. ..... इस निद्रा को घटाने और सुधारने में सतत प्रयत्नशील होते है ।
१९. नम्रता विनय गुण वाला..... जीव उच्च गोत्र बाँधता है ।
२०. दूसरो के हित में .....तत्पर बनो ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. साधु जीवन की शुद्धता के लिये आहार शुद्धि के साथ साथ आहार वहोराने में क्या रखना अत्यन्त जरुरी है ?
२. किस दिशा में मस्तक रखकर सोना नहीं चाहिये ?
३. सर्व कल्याण का कारण कौन हैं ?
४. धर्म के प्रभाव से दूसरे भव में रुप रसादि पाने की अभिलाषा कौन सा अतिचार है ?
५. वेद पदो में परब्रह्म वह क्या है ?
६. दूसरों का हित करने की भावना वाला जीव कौनसा आयुष्य बांधता है ?
७. महा हिमवंत पर्यत का रंग कैसा है ?
८. मन की प्रसन्नता क्या करने से होती है ?
९. मृत्यु को रोकने की शक्ति किसी में नहीं पर उसे सुधार कर कैसा बना सकते हैं ?
१०. धवल शेठ ने किस गति का आयुष्य बांधा था ?
११. संलेखना करने वाला जीव सभी पर से किस भाव को दूर करके संलेखना करता है ?
१२. सेवक हर घंटे किसे चेतावनी देता था ?
१३. वीरप्रभु ने तीर्थ की अनुज्ञा किसे दी ?
१४. लघु संग्रहणी का अभ्यास करने के पश्चात क्या जानने की जिज्ञासा रखनी चाहिये ?
१५. आठ मुख्य कर्म और उसके उत्तर भेद हमें क्या देते हैं ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) रइया २) वल्लयः ३) प्राकु ४) पमाओ ५) अज्झयण ६) आयरं ७) निद्धंत ८) पकुणई ९) मुवहि १०) कणयमया ११) रायाइ १२) तस्स १३) दुसउच्चा १४) रुध्दो १५) नासणा १६) सोअव्वो १७) यांति १८) माहिवंता १९) वाल्मिके २०) अगार विल्लो

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) निरहंकारी	१) अतिचार	६) पूजनीक	६) रुप
२) संलेषणा	२) कपटी	७) विनयरत्न	७) अनशन
३) श्रद्धा	३) उच्चासने	८) द्रव्य	८) पन्ना
४) नीलवंत	४) पर्याय	९) अनाभोग	९) परमपद
५) स्मृति	५) गुण-ग्राही	१०) शब्द	१०) पुराण

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. सितोदा नदी का मुख कितने योजन है ?
२. श्री प्रभास गणधर ने संलेखना की तब कितने वर्ष के थे ?
३. नाम कर्म कुल कितनी प्रकृतियां रखता है ?
४. नींद के लिये कितने स्थान निषिद्ध है ?
५. संलेखना व्रत में कितने जनों की ऋधिं पाने की अभिलाषा नहीं करनी है ?
६. समय क्षेत्र कितने योजन प्रमाण है ?
७. ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय बंध के कितने हेतु बताये गये है ?
८. बारहवें व्रत में श्रावक को कितने प्रहर का पौषध करने का है ?
९. निद्रापूर्व श्रावक को कितने ऊर्ध्व स्थानक की आलोचना करना है ?
१०. जगत के सभी जीवों के कल्याण की कामना कितनावी गाथा में की गई है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. हम अपनी नींद घटाकर जीवन के कार्यशील पल बढाये ।
२. जो पर्व तिथि आदि देखकर भोजन के लिये आये उसे अतिथि कहते है ।
३. वीर प्रभु के ग्यारहवें गणधर कौशिक गौत्रीय थे ।
४. चाहे जैसी कसौटी में भी धर्म में स्थिर रहे वह दृढधर्मी है !
५. ढाई द्वीप के बाहर सूर्य-चंद्र नहीं हैं ।
६. संलेखना के प्रभाव से चक्रवर्ती की पदवी की अभिलाष करना परलोकाशंसा प्रयोग नाम का अतिचार है ।
७. अजितनाथ तथा शांतिनाथ भगवान का कीर्तन करते पुरुषों का पुन्य बढता है ।
८. शुद्ध मोक्ष मार्ग का नाश करने वाला चारित्र मोहनीय कर्म बांधता है ।
९. पूर्व दिशा में मस्तक रखकर सोने से धन का लाभ होता है ।
१०. शिखरी पर्वत का रंग पीला है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. जीवन में व्रतों का पालन जीवन को सुंदर बनाता है ।
२. सर्व जीवों पर दया करुणा धारण करना ।
३. शारिरीक थकान दूर कर नयी स्फूर्ति प्राप्त करने के लिये यह निद्रा आवश्यक है ।
४. संवत्सरी प्रतिक्रमण मे उपसर्गो का निवारण करने वाले इस स्तवन को अवश्य पढना चाहिये ।
५. सर्वज्ञ के वचनों में शंका नहीं करनी चाहिये ।
६. हम साधु को शुद्ध दान देकर सच्चा लाभ कमाये इसके लिये इस व्रत की सच्ची समझ आवश्यक है ।
७. विचक्षण विद्वान ने बीज बुद्धि से तुरंत मोक्ष के बारे में समझ लिया ।
८. सरल और गारव रहित शुभ नाम कर्म बांधता है ।
९. सुकृत की अनुमोदना करने से पुण्य में वृद्धि होती है ।
१०. अग्निहोत्र क्रिया में कितने जीवों का वध होता है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. अतिथि संविभाग २) समय क्षेत्र ३) ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्म बंध के विशेष हेतु
४. निद्रा विधि ५) अग्निहोत्र के बारे में प्रभास की समझ ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com